SET-3

Series SSO

कोड नं. **29/3**
Code No.

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **8** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं ।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)

HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घण्टे — *अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours — *Maximum Marks : 100*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

स्वामी विवेकानन्द आदर्श और उज्ज्वल चरित्र के बहुत बड़े समर्थक थे । कठोपनिषद् का एक मंत्र है जिसका उल्लेख वे प्रायः किया करते थे । 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।' यानी उठो, जागो और ऐसे श्रेष्ठजनों के पास जाओ, जो तुम्हारा परिचय परमात्मा से करा सकें । इसमें तीन बातें निहित हैं । पहली, तुम जो निद्रा में बेसुध पड़े हो, उसका त्याग करो और उठकर बैठ जाओ । दूसरी, आँखें खोल दो अर्थात् अपने विवेक को जागृत करो । तीसरी, चलो और उन उत्तम कोटि के पुरुषों के पास जाओ, जो ईश्वर यानी जीवन के चरम लक्ष्य का बोध करा सकें । जीवन-विकास के राजपथ पर स्वर्ग का प्रलोभन और नरक का भय काम नहीं करता । यहाँ तो सत्य की तलाश में आस्था, निष्ठा, संकल्प और पुरुषार्थ ही जीवन को नई दिशा दे सकते हैं ।

महावीर की वाणी है – 'उट्ठिये णो पमायए' यानी क्षण भर भी प्रमाद न हो । प्रमाद का अर्थ है – नैतिक मूल्यों को नकार देना, अपनों से अपने-पराए हो जाना, सही-ग़लत को समझने का विवेक न होना । 'मैं' का संवेदन भी प्रमाद है, जो दुख का कारण बनता है । प्रमाद में हम अपने आप की पहचान औरों के नज़रिये से, मान्यता से, पसंद से, स्वीकृति से करते हैं, जबकि स्वयं द्वारा स्वयं को देखने का क्षण ही चरित्र की सही पहचान बनता है । चरित्र का सुरक्षा-कवच अप्रमाद है, जहाँ जागती आँखों की पहरेदारी में बुराइयों की घुसपैठ संभव ही नहीं । बुराइयाँ दूब की तरह फैलती हैं, मगर उनकी जड़ें गहरी नहीं होतीं, इसलिए उन्हें थोड़े-से प्रयास से उखाड़ फेंका जा सकता है । जैसे ही स्वयं पर स्वयं का विश्वास और अपनी बुराइयों का बोध जागेगा, परत-दर-परत जमी बुराइयों व अपसंस्कारों में बदलाव आ जाएगा । चरित्र जितना ऊँचा और सुदृढ़ होगा, जीवन मूल्य उतनी ही तेज़ी से विकसित होंगे और सफलताएँ उतनी ही तेज़ी से क़दमों को चूमेंगी । इसलिए परिस्थितियाँ बदलें, उससे पहले प्रकृति बदलनी ज़रूरी है । बिना आदत और संस्कारों को बदले न सुख सम्भव है, न साधना और न ही साध्य ।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । *1*

(ख) विवेकानंद किस मंत्र का उल्लेख करते थे ? उसका मूल स्रोत क्या है ? *1*

(ग) कठोपनिषद् के मंत्र का शाब्दिक अर्थ क्या है ? *1*

(घ) इस मंत्र में निहित सभी बातों को स्पष्ट कीजिए । *2*

(ङ) किन गुणों से जीवन को नई दिशा मिल सकती है ? *1*

(च) 'प्रमाद' का क्या तात्पर्य बताया गया है ? *2*

(छ) 'प्रमादी' व्यक्ति अपनी पहचान कैसे करता है ? *1*

(ज) बुराइयों की तुलना दूब से क्यों की गई है ? *2*

(झ) आशय स्पष्ट कीजिए – 'स्वयं द्वारा स्वयं को देखने का क्षण ही चरित्र की सही पहचान बनाता है ।' *2*

(ञ) सरल वाक्य में बदलिए – 'बिना आदत और संस्कारों को बदले न सुख सम्भव है, न साधना और न ही साध्य ।' *1*

(ट) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए : *1*

परिस्थितियाँ, नैतिक ।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1×5=5*

जन्म दिया माता-सा जिसने, किया सदा लालन-पालन,
जिसके मिट्टी-जल से ही है रचा गया हम सबका तन ।
गिरिवर नित रक्षा करते हैं, उच्च उठा के शृंग महान,
जिसके लता-द्रुमादिक करते हमको अपनी छाया दान ।
माता केवल बाल-काल में निज अंक में धरती है,
हम अशक्त जब तलक तभी तक पालन पोषण करती है ।
मातृभूमि करती है सबका लालन सदा मृत्यु पर्यंत,
जिसके दया-प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत ।
मर जाने पर कण देहों के इसमें ही मिल जाते हैं,
हिंदू जलते, यवन-ईसाई शरण इसी में पाते हैं ।
ऐसी मातृभूमि मेरी है स्वर्गलोक से भी प्यारी,
उसके चरण-कमल पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी ।।

(क) 'जन्म दिया माता-सा जिसने' किसके लिए कहा गया है ? उसने हम पर क्या उपकार किए हैं कि उसे माँ कहा जाए ?

(ख) यह कैसे कहा जा सकता है कि मातृभूमि माँ से भी बढ़कर है ?

(ग) काव्यांश की पहली पंक्ति और अंतिम पंक्ति में किन अलंकारों का प्रयोग हुआ है ?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए :

जिसके दया-प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत ।

(ङ) काव्यांश का केन्द्रीय भाव लिखिए ।

खण्ड ख

3. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर निबन्ध लिखिए : *10*

(क) विकास के पथ पर भारत

(ख) मेरा जीवन स्वप्न

(ग) जन-धन योजना

(घ) अशिक्षा सब समस्याओं का मूल

4. पुत्र की चाह में लोग लड़की को जन्म नहीं लेने दे रहे हैं । इस जघन्य अपराध और उससे समाज की संरचना में आ रहे बदलाव पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । *5*

अथवा

सड़कों पर आए दिन हो रही दुर्घटनाओं और उनके परिणामों पर चिंता व्यक्त करते हुए पुलिस आयुक्त (परिवहन) को एक पत्र लिखकर इससे निपटने के लिए ठोस उपाय करने का आग्रह कीजिए ।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए : $1 \times 5 = 5$

(क) जनसंचार (मीडिया) शब्द को संक्षेप में परिभाषित कीजिए ।

(ख) जनसंचार के संदर्भ में द्वारपाल (गेटकीपर) किन्हें कहा गया है ? वे क्या तय करते हैं ?

(ग) संपादन के तत्त्वों में 'वस्तुपरकता' को स्पष्ट कीजिए ।

(घ) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई थी ? अब यह (AIR) किस संस्था के अंतर्गत आता है ?

(ङ) विशेष लेखन से क्या तात्पर्य है ?

6. 'जातिवाद का ज़हर' **अथवा** 'बाल श्रमिकों की समस्या' विषय पर एक आलेख लिखिए । *5*

खण्ड ग

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *8*

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब-सी नमी है ।

अथवा

राघौ ! एक बार फिरि आवौ ।
ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ ।।
जे पय प्याय पोखि कर-पंकज बार-बार चुचुकारे ।
क्यों जीवहिं, मेरे राम लाड़िले ! ते अब निपट बिसारे ।।
भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे ।
तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे ।।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** काव्यांशों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए : *3+3=6*

(क) कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मूँदि रहए दु नयान ।
कोकिल कलरव, मधुकर धुनि सुनि, कर देइ झाँपइ कान ।।

(ख) यह मधु है – स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस-जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय ।

(ग) इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल !
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण ।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *3+3=6*

(क) केशवदास ने 'बानी जगरानी' की प्रशंसा में जो उद्‌गार व्यक्त किए हैं उनका भाव अपने शब्दों में लिखिए ।

(ख) भरत और राम के प्रेम की विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।

(ग) 'वसंत आया' कविता के आधार पर मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्धों में आ रहे बदलाव पर टिप्पणी कीजिए ।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *6*

स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह नहीं है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पश्चिम की देखा-देखी और नक़ल में योजनाएँ बनाते समय प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच का नाजुक संतुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है – इस ओर हमारे पश्चिम-शिक्षित सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया । हम बिना पश्चिम को मॉडल बनाए, अपनी शर्तों और मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं, कभी इसका खयाल भी हमारे शासकों को आया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता ।

अथवा

चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है । और मूर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरि-कांतार में भी ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है । कितनी कठिन जीवनी शक्ति है । प्राण ही प्राण को पुलकित करता है, जीवनी-शक्ति ही जीवनी-शक्ति को प्रेरणा देती है ।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *4+4=8*

(क) संवदिया के रूप में हरगोबिन के चरित्र की विशेषताएँ सोदाहरण बताइए ।

(ख) मनोकामना की गाँठ को 'अद्भुत अनोखा' क्यों कहा गया है ? 'दूसरा देवदास' के आधार पर प्रकरण-सहित टिप्पणी कीजिए ।

(ग) भीष्म साहनी के लेख के आधार पर यास्सेर अराफ़ात के आतिथ्य-प्रेम पर प्रकाश डालिए ।

12. रामविलास शर्मा **अथवा** भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । *6*

अथवा

'अज्ञेय' **अथवा** 'मलिक मोहम्मद जायसी' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

13. 'प्रकृति सजीव नारी बन गई' – 'बिस्कोहर की माटी' के इस कथन के आलोक में प्रकृति, नारी और सौंदर्य-सम्बन्धी लेखक की मान्यताएँ जीवन-मूल्यों के आलोक में स्पष्ट कीजिए । *5*

अथवा

'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' – इस कथन के आलोक में सूरदास के उन जीवन-मूल्यों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए जिनसे वह ईर्ष्या, अपमान, प्रतिशोध जैसी भावनाओं पर नियंत्रण रख सका ।

14. (क) प्राकृतिक आपदाओं से जूझने में पहाड़ पर रहने वाले लोगों के संघर्ष पर 'आरोहण' कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए । *5*

(ख) 'हमारी वर्तमान सभ्यता नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है' — क्यों और कैसे ? इस दिशा में क्या किया जा सकता है ? स्पष्ट कीजिए । *5*